भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्
(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड १८] दिसम्बर १९६६ [अंक २

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
१.	स्तरों के सरसीकरण के सम्बन्ध में (जी० आर० सेठ)	iii
२.	तृतय घूर्ण क्ष³ तथा त सन्निकट मानों के उपयोग के सम्बन्ध में (एम० एल० टीकू)	iii
३.	साधारण एवम् संशोधित साधारण प्वासों प्रक्रियायें तथा उनके प्राचनों के अधिकतम प्रत्याशा आगणन (वी० मुकर्जी)	iii
४.	लेहमैन का द्विप्रतिदर्श अप्राचल परीक्षण (बी० वी० सुखात्मे तथा एम० बी० देशपांडे)	iv
५.	एक प्रकार की केन्द्रीय संयुक्त अनुक्रिया पृष्ठ अभिकल्पनायें (के० सी० जॉर्ज तथा एम० एन० दास)	iv
६.	ब्रासिका कैम्पैस्ट्रिस में उपविशिष्ट भेदीकरण का विहित विश्लेषण (वी० आर० मूर्ति तथा वी० अरुणाचलम्)	vi
७.	असमान सम्भाविताओं में जनसंख्या योग्य आगणन के प्रसरण के आगणनों के सम्बन्ध में (जी० आर० सेठ)	vi
८.	शहरी क्षेत्रों में दुग्ध के व्यापार हेतु उत्पादन में धन लगाना (के० सी० राउत)	vi

पृष्ठ

९. नियंत्रित साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी में आगणन की अनुपातीय एवम् समाश्रयण विधियों के बारे में एक टिप्पणी (एम० एस० अवधानी तथा बी० वी० सुखात्मे) vii

१०. कृषि-भाव निर्धारण के सिद्धान्त तथा समस्याय (भारत सरकार के कृषि-भाव आयोग्य के अध्यक्ष प्रो० एम० एल० दन्तवाला) xi

११. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद् १९६४-६५ वर्ष के लिए संसद् के कार्यों का पुनर्विलोकन vii

स्तरों के सरसीकरण के सम्बन्ध में

जी० आर० सेठ

कृषि अनुसन्धान सांख्यिकी संस्था, नई-दिल्ली

सारांश

प्रत्येक स्तर में से एक प्रतिदर्श एकक पर आधारित प्रयागत स्तरित साधारण यादृच्छिक आगणन के प्रसरण का एक आगणन सुझावित किया गया है जिसका कौकर्ण द्वारा सुझावित किये गये आगणन से अधिक सामान्य प्रयोग है।

ततय घूर्ण क्ष[२] तथा त सन्निकट मानों के उपयोग के सम्बन्ध में

एम० एल० टीकू

रीडिंग विश्वविद्यालय, इंग्लैंड

सारांश

यह संख्यात्मक रूप से निर्देशित किया गया है कि कई एक असामान्य वन्टनों के सम्भाविता समाकल तथा प्रतिशत बिन्दुओं के लिये संतोषजनक सन्निकट मान प्राप्त करने के लिये तृतय घूर्ण क्ष[२] तथा त वन्टनों को सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है।

साधारण एवम् संशोधित साधारण प्वासों प्रक्रियायें तथा उनके प्राचनों के अधिकतम प्रत्याशा आगणन

वी० मुकर्जी

जी० आई० पी० ई०, पूना

लेखक ने टिन्टनर के सहयोग से क्षेत्रीय विकास की प्रक्रिया में साधारण तथा संशोधित साधारण प्वासों प्रक्रिया के प्रयोग के बारे में विचार किया है। उनकी संशोधित साधारण प्वासों प्रक्रिया में चर केवल ०, प, २प,.....इत्यादि केवल असतत मान धारण करते हैं। इस पत्र में साधारण प्वासों प्रक्रिया से स समान दूरी वाले चरों के सम्मिलित सम्भाविता जनक फलन प्राप्त किये गये हैं। आगे साधारण

तथा संशोधित साधारण प्वासों प्रक्रिया के प्राचनों के अधिकतम प्रत्याशा आगणन प्राप्त किये गये हैं तथा साधारण प्वासों प्रक्रिया के कुछ साधारण न्यूनतम वर्ग आगणन निकाले गये हैं। चूँकि प का अधिकतम प्रत्याशा जटिल रूप में है तथा उसका प्रसरण और भी अधिक जटिल है, इसलिये प के कुछ साधारण अनन्त स्पर्शत: अन्तर्भिन्नत आगणन तथा उनके प्रसरणों पर टिन्टनर के ढंग पर विचार किया गया है।

लेहमैन का द्विप्रतिदर्श अप्राचल परीक्षण

वी० वी० सुखात्मे तथा एम० बी० देशपाण्डे
कृषि अनुसन्धान सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली

यह लेख लेहमैन के द्विप्रतिदर्श द्विदिशा अप्राचल परीक्षण तथा इसकी तुलना विलकाक्सन के, स्थिति में अन्तरों को जाँचने के लिये, द्विदिशा कोटि परीक्षण के सम्बन्ध में है। प्रस्तावित परीक्षण प्रतिदर्शज के वैकल्पिक व्यंजन दिये गये हैं तथा विभिन्न परिमाणों के प्रतिदर्शों के लिये सम्भावितः बंटन प्राप्त करने के लिये एक आवृत्ति सम्बन्ध भी प्राप्त किया गया है। इस सम्बन्ध को प्रयोग करके प्रथम तीन घूर्ण व्युत्पन्न किये गये हैं। इस परिकल्पना के अन्तर्गत परीक्षा अधीन प्रतिदर्शज को स्वातंत्रीय संख्या एक वाले χ^2 की भाँति अनन्त-स्पर्शीय रूप से बंटित दर्शाया गया है। इस परीक्षण की तुलना विलकाक्सन के परीक्षण से सामान्य, आयताकार तथा घातीय वैकल्पिकों के लिये की गयी है तथा यह विलकाक्सन के परीक्षण से अधिक शक्तिशाली पाया गया है।

एक प्रकार की केन्द्रीय संयुक्त अनुक्रिया पृष्ठ अभिकल्पनायें

के० सी० जॉर्ज तथा एम० एन० दास
कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

अनुक्रिया पृष्ठ अभिकल्पनाओं की एक श्रेणी उनके विश्लेषण व्युत्पत्ति सहित प्राप्त की गयी है। यह अभिकल्पनायें घुमाने योग्य अभिकल्पनाओं में आवश्यक मात्रा के स्थान पर सामानान्तरित मात्रा ले कर केन्द्रीय संयुक्त घुमाने योग्य अभिकल्पनाओं से प्राप्त की जा सकती हैं। यह दिखाया गया है कि केन्द्रीय अभिकल्पना में अगणित अनुक्रिया की शुद्धता की दृष्टि से यह अभिकल्पनायें केन्द्रीय संयुक्त घुमाने योग्य अभिकल्पनाओं से उत्तम हैं। प्रसरण विधि की उदाहरण सहित व्याख्या की गयी है।

ब्रासीका कैम्पैस्ट्रिस में उपविशिष्ट भेदीकरण का विहित विश्लेषण

वी० आर० मूर्ति तथा वी० अरुणाचलम्

भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

ब्रासीका कैम्पैस्ट्रिस में उपविशिष्ट भेदीकरण के लिये वैकासिक शक्तियों के विहित विश्लेषण द्वारा पुष्टी की गयी तथा घा[२] प्रतिदर्शज द्वारा स्पष्ट रूप से विभिन्न शक्तियाँ प्रकट हुई हैं। स्वयंसंगत तथा स्वयं असंगत प्रकारों में स्पष्टतः विभिन्न अनुवांशिक आकृति के लिये प्रजनन पद्धति में परिवर्तन के अतिरिक्त एक तीव्र विकास उत्तरदायी सिद्ध हुआ।

असमान सम्भाविताओं में जनसंख्या योग्य आगणन के प्रसरण के आगणनों के सम्बन्ध में

जी० आर० सेठ

कृषि अनुसन्धान सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली

इस लेख में हारविट्स टामसन के योग के आगणन के प्रसरण के येट्स तथा ग्रूण्डी द्वारा दिये गये आगणन को साहित्य में अभी तक विचार किये हुए सम्भाविता पद्धति के लिये अऋणात्मक दर्शाया गया है।

शहरी क्षेत्रों में दुग्ध के व्यापार हेतु उत्पादन में धन लगाना

के० सी० राउत

कृषि अनुसन्धान सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली

दिल्ली, मद्रास तथा कलकत्ता में किये गये सर्वेक्षणों के अन्तर्गत एकत्रित किये गये शहरी व्यापारिक अस्तबलों के आँकड़ों को प्रयोग करके धन लगाने की वर्त्तमान दर, विभिन्न अदाओं में इसका वितरण तथा वसूल होने वाली आय का अध्ययन किया गया था। कुल लगाये हुए धन तथा लगाये हुए धन के विभिन्न घटकों के भी साथ कुल आय का सम्बन्ध ज्ञात करने के लिये विस्तृत अध्ययन किये गये हैं। लगाये हुए धन की श्रेष्ठ मात्रा तथा अधिकतम आय वसूल करने के लिये विभिन्न घटकों में इसके वितरण के अनुमान प्राप्त किये हैं।

नियंत्रित साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शों में आगणन की अनुपातीय एवम् समाश्रयण विधियों के बारे में एक टिप्पणी

एम० एस० आवधानी तथा बी० वी० सुखात्मे

कृषि अनुसन्धान सांख्यिकी संस्था, नई दिल्ली

जनसंख्या से अ-इच्छानुसार प्रतिदर्शों के चयन की सम्भाविता का निरसन या इसे कम करने के लिये लेखकों ने नियंत्रित साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी रीति का प्रारंभ किया है तथा यह दर्शाया है कि इस विधि से साधारणतया साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी की सामान्य विधि द्वारा जनसंख्या योग आगणनों के समान दक्ष आगणन प्रदान किये जायेंगे, परन्तु जबकि एक सर्वेक्षण में पूछताछ के लिये साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी लिया जाता है तथा यदि सहायक सूचना जनसंख्या के सभी एककों के बारे में उपलब्ध हो, तो इस जानकारी को प्रयोग करना आचारिक है या तो आगणन की अनुपातीय विधि अथवा समाश्रयण विधि को अपनाने से जिससे कि जनसंख्या जो कि अधिक दक्ष आगणन प्राप्त हो सकें। इसलिये इस समस्या पर विचार करना लाभदायक होगा कि नियंत्रित साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी में अनुपातीय तथा समाश्रयण आगणनों की साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी में आगणनों से किस प्रकार तुलना हो सकती है। इस लेख में यह दर्शाया गया है कि नियंत्रित साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी में अनुपातीय तथा समाश्रयण आगणन कम से कम इतने दक्ष होंगे जितने की साधारण यादृच्छक प्रतिदर्शी में।

कृषि-भाव निर्धारण के सिद्धांत तथा समस्यायें

भारत सरकार के कृषि-भाव आयोग के अध्यक्ष

प्रो० एम० एल० दन्तवाला

द्वारा दिये गये प्रावैधिक अभिभाषण का संक्षिप्त सार

सरकार ने इस वर्ष के आरम्भ में कृषि-भाव अयोग की नियुक्ति, कृषि-भाव नीति तथा भाव-संरचना के बारे में सलाह देने तथा कृषि उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता तथा उपभोक्ता को सहायता देने के प्रसंग में की थी। इसका मुख्य ध्येय था अर्थ-व्यवस्था की समस्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा उत्पादक तथा उपभोगता के हितों का उचित ध्यान रखते हुए एक सन्तुलित तथा समैकित भाव-संरचना प्रस्तुत करना। सन्तुलित तथा समैकित भाव-संरचना प्रस्तुत करने का कार्य जो कि कृषि-भाव आयोग को सौंपा गया है, इसके लिये एक विचार से सन्तु-

लित या आधारित भाव के बारे में प्रत्याशा की आवश्यकता पड़ेगी। अन्य बातोंके साथ-साथ कृषि क्षेत्र में सन्तुलित भाव संरचना ऐसी होनी चाहिये जो कि (क) कृषि में अदाओं की सीमान्त उपादकताओं तथा उनके भावों, (ख) उत्पादनकारकों की माँग (अलग-अलग तथा सामूहिक रूप से) तथा उन का संभरण, (ग) कृषि पदार्थों की माँग (अलग-अलग तथा सामूहिक रूप से), तथा उनका संभरण, को समैकित करे।

आधार भाव या सन्तुलित भाव की प्रत्याशा करने के लिए भाव निर्धारण अधिकारी मुख्यतः उन प्रतिरूपों में रुचि रखते हैं जिनमें कृषि पदार्थों की आवश्यकता तथा संभरण सम्बन्धों पर संयुक्त रूप से विचार किया गया हो। भावों का आर्थिक कार्य (उत्पादन तथा निवेष) और कोई नहीं है सिवाय इसके कि साधनों की सीमाओं, उत्पादन तथा मूल्य सापेक्षिताओं के तकनीकी गुणांक को ध्यान में रखते हुए माँग तथा संभरण को समाकित करे। विकास-शील अर्थ-व्यवस्थाओं में भाव नीति होनी चाहिए—जैसा कि कृषि भाव आयोग के ध्येय में जोर दिया गया है—उत्पादन पर आधारित तथा इसमें प्रोत्साहन का एक तत्व होना चाहिए। भाव निर्धारण अधिकारी का कार्य केवल अलग-अलग फसलों के मूल्य स्तर के बारे में सलाह देना ही नहीं परन्तु एक दूसरी फसल के मूल्य के सम्बन्धों के बारे में भी बताना है जिससे कि उत्पादन इच्छानुसार प्रकार का हो सके। इस प्रसंग में, उत्पादन की लागत—विशेषकर उन कृषकों की जो कि सुधरी हुई तकनीक अपनाते हैं तथा फसलों के लिए एक दूसरे के मूल्य में समतायें सम्बद्ध हो जाती हैं। यदि मूल्य विनियमन का आर्थिक उद्देश्य उत्पादन को बढ़ावा देना है तो नीति ऐसी होनी चाहिए जिससे कि भाव का गारंटी द्वारा उन्नतशील कृषक जो कि सुधरी हुई तकनीक अपनाने के लिए तैयार है, के उत्पादन मूल्य को ढकने का विश्वास दिलाए। गारण्टी दिया हुआ भाव ऐसा होना चाहिए जो कि अधिक दक्ष उत्पादन के अधिकतर भाग की जुताई की लागत को ढक ले।

इससे यही प्रतीत होगा कि जब तक अधिक निखरे हुए तथा यथार्थ लागत आँकड़े उपलब्ध नहीं होते तब तक भाव निर्धारण अधिकारी के पास सिवाय इसके कि मूल्यों की न्यूनतम स्तरों की सिफारिश करने में अपनी उत्तम सूचना पर आधारित निर्णय को प्रयोग में लाए, कोई चारा नहीं है। कृषि-भाव उद्योग ने पहले ही लागत के अधिक यथार्थ आँकड़े प्राप्त करने के लिए एक योजना का सुझाव दिया है। कृषि भाव आयोग ने सम्भरण अनुक्रिया के विस्तृत अध्ययन का आरम्भ किया है। इस समय केवल समस्त भारत स्तर पर इन आँकड़ों के परिणाम उपलब्ध हैं। यह परिणाम मूल्य आपेक्षिकाओं तथा क्षेत्रफल अनुक्रियाओं के बीच कुछ व्यापक सम्बन्धों के संकेतक हैं। निम्नलिखित परिकल्पनाओं को रूप दिया गया तथा उनकी परीक्षा की

गयी :—

(क) किसी फसल के लिए क्षेत्रफल आधारित करने के निर्णय उस फसल से तथा प्रतिस्थापन योग्य फसल द्वारा गत वर्ष में प्राप्त मूल्य पर आश्रित हैं।

(ख) किसी फसल के लिए क्षेत्रफल नियत करने के निर्णय उस फसल द्वारा गत वर्ष में प्राप्त मूल्यों तथा प्रतिस्थापन योग्य फसल के मूल्यों के अनुपात पर आश्रित हैं।

(ग) किसी फसल के लिए क्षेत्रफल नियत करने के निर्णय गत वर्ष में उस फसल से कुल प्राप्ति (मूल्य × उत्पत्ति) तथा प्रतिस्थापन योग्य फसल से कुल प्राप्ति के अनुपात पर आश्रित हैं। हमारे समस्त व्यवसाय का यह उत्तरदायित्व है कि कृषि-भाव नीति में एक निर्माणात्मक अंश दान दें।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद् १९६४-६५ वर्ष के लिए संसद् के कार्यों का पुनर्विलोकन

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसदीय परिषद् की ओर से ३० जून १९६५ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए संसद् के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। इस वर्ष में संसद् के सदस्यों की संख्या गत वर्ष २१२ की तुलना में २२० रही। सदस्यों में से ६ सम्मानार्थ, ७ संरक्षक, ५० स्थायी तथा १५७ साधारण सदस्य हैं। सदस्यगण भारत के सभी भागों तथा विदेशों से भी हैं। कृषि सांख्यिकों तथा अन्य कार्यकर्त्ता, जो मुख्यतः कृषि सम्बन्धी सांख्यिकों के विकास में रुचि रखते हैं, के अतिरिक्त सदस्यता कृषि एवम् अन्य सरकारी विभागों, संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों तक विस्तृत है। इसकी नियमित सदस्यता के अतिरिक्त, संसद् के पास पत्रिका को लेने वालों की एक सहायक सूची भी है जिसमें देश और विदेश की प्रसिद्ध अनुसन्धान संस्थाएँ सम्मिलित हैं। इस वर्ष में भारतीय तथा विदेशी ग्राहकों की संख्या १६० थी।

संसद् के कार्यों का नेतृत्व करने के लिए संसद् इसके भूतपूर्व प्रधान श्री एस० के० पाटिल भारत सरकार के भूतपूर्व कृषि एवम् खाद्य मन्त्री के प्रति आभार मानती है। संसद् श्री सी० सुब्रह्मन्यम् भारत सरकार के खाद्य एवम् कृषि मन्त्री के प्रति आभार प्रकट करना चाहती है, क्योंकि वे इसका प्रधान होने के लिये सहमत हो गये और विशेषकर क्योंकि उन्होंने संसद् के वर्तमान १९वें वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए अपने अति भारी व्यवसायों की मध्यस्थता में समय निकाला।

संसद् के प्रकाशन कार्यक्रम के सम्बन्ध में यह कहना है कि इस वर्ष में संसद् की पत्रिका के खण्ड १६ का अंक १ व २ एवं खण्ड १७ के अंक १ का प्रकाशन किया गया। खण्ड १७ के अङ्क २ जोकि मुद्रणालय में है बंगलौर के मुद्रणालय के सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन समयानुसार हो गया है तथा संसद् आशा करती है कि इसे पत्रिका के सामयिक प्रकाशन को बनाये रखने के योग्य बनाया जायेगा।

पत्रिका का स्तर इसके सम्पादकों एवं लेखकों के प्रयत्नों के द्वारा उच्च कोटि का होने के कारण संसद् के पास इसकी पत्रिका से इसी प्रकार की समस्त संसार की प्रसिद्ध संस्थाओं की पत्रिकाओं से अदल-बदल करने के लिए अनेक प्रार्थनायें आती हैं। स्थान एवं सुविधाओं के सीमित होने के कारण संसदीय परिषद् इसका अदला-बदला कुछ सीमित विचारपूर्वक चुनी हुई पत्रिकाओं से ही करती है। इस समय ऐसी १६ पत्रिकाएँ हैं जोकि संसद् की पत्रिका के बदले में आती हैं। इस वर्ष अदला-बदली करने के लिए चार प्रार्थनायें आयीं। बदले में आने वाली पत्रिकायें कृषि सांख्यिकी अनुसन्धानशाला, लाइब्रेरी एवेन्यु, नई दिल्ली-१२ के पुस्तकालय में रखी जाती हैं तथा संसद् सदस्यों के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। इसकी सूची समय-समय पर संसद् की पत्रिका में प्रकाशित की जाती है। हिन्दी परिशिष्ट पत्रिका के विशेष लक्षण के रूप में चल रहा है। यह संसद् की ओर से सांख्यिकी विषय पर हुए वैज्ञानिक विवादों का राष्ट्र-भाषा हिन्दी में यथार्थ वर्णन करने के प्रयत्न को प्रदर्शित करता है।

संसद् को वैज्ञानिक कार्यों एवं पत्रिका की छपाई के लिए पर्याप्त धन की समस्या संसद् की कार्यकारी परिषद् का ध्यान सदैव आकर्षित करती है, क्योंकि ऐसी प्रावैधिक पत्रिका के प्रकाशन का व्यय अधिक होता है, इसलिये इसके प्रकाशन का कार्य उस अनुदान से चलाया जाता है जो कि केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों तथा अन्य राष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त होता है। इस वर्ष में अनुदान उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात सरकार तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्था एवम् भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् से प्राप्त हुए। संसद् इन संगठनों से प्राप्त वित्तीय सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकृत करना चाहती है।

सांख्यिकी में अनुसन्धान की प्रगति के लिये संसद् ने इसकी पत्रिका में प्रकाशित उच्च कोटि के लेखों को पुरस्कार अर्पित करने की एक योजना की स्थापना की है। पत्रिका में प्रकाशित (१) प्रयोग अभिकल्पना एवम् विश्लेषण (२) प्रतिदर्श सर्वेक्षण (३) सांख्यिकी जैनेटिक्स (४) सांख्यिकीय विधियाँ और (५) प्रयोगात्मक लेखों, प्रत्येक के क्षेत्र में उच्चतम लेखों के लिये ५००-५०० रु० के पाँच पुरस्कार दिये जाते हैं।

आइ० सी० ए० आर० द्वारा प्रकाशित और डॉ० पान्से एवम् डॉ० सुखात्मे द्वारा रचित पुस्तक "कृषि कार्यकर्त्ताओं के लिये सांख्यिकीय विधियाँ" के समान पशु-

पालन विधियों के बारे में एक पुस्तक की माँग को ध्यान में रखते हुए संसद् की कार्यकारिणी परिषद् ने ऐसी एक पुस्तक का प्रकाशन करने का निश्चय किया है। संसदीय परिषद् के निमंत्रण पर इस क्षेत्र में प्रसिद्ध सांख्यिक श्री वी० एन० आम्ले इस पुस्तक का हस्तलेख तैय्यार करने के लिये सहमत हो गये हैं। इसके तैय्यार करने के लिये परिषद् ने दो वर्ष के समय में ३,००० से ४,००० रु० तक वित्तीय सहायता प्रदान करने का निश्चय किया है।

संसदीय परिषद् ने भारतीय सांख्यिकों के अनुसन्धान कार्यों के सम्मिलित कार्यों पर परिसंवाद पुस्तक के प्रकाशन का कार्य भार लेने का भी निश्चय किया है। यह पुस्तक एक ही खंड में भारतीय सांख्यिकों द्वारा किये गये कार्यों का विस्तृत-पुनर्विलोकन तथा इस क्षेत्र में व्यापक ग्रन्थ सूची प्रदान करेगी। इस क्षेत्र में काम करने वाले लगभग एक दर्जन प्रमुख भारतीय कार्यकर्त्ताओं, जो कि देश और विदेशों में हैं, को यह पुनर्विलोकन तैय्यार करने के लिये प्रार्थनायें भेजी गयी हैं और हमें यह कहते हुए प्रसन्नता है कि उन सबने इस योजना का स्वागत किया है तथा वह इस में सहयोग करने के लिये सहमत हो गये हैं।

संसद् द्वारा प्रकाशित डॉ० पी० वी० सुखात्मे द्वारा रचित पुस्तक 'प्रतिदर्श सर्वेक्षणों के सिद्धांत' प्रयोग सहित की माँग बराबर चल रही है। प्रतिदर्श सिद्धांतों पर इस महत्वपूर्ण पुस्तक का संशोधित संस्करण शीघ्र ही छप जाने की आशा है।

इस वर्ष में (१९६४-६५) संसद् का महत्वपूर्ण कार्य था कृषि उत्पादन के लिए योजना पर एक परिसम्वाद का आयोजन। यह भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संसद् के साथ सम्मिलित रूप से ९ से १५ नवम्बर १९६४ को मढेरा में हुआ। इस विषय में विशेष रुचि रखने वाले प्रशासकों, सांख्यिकियों एवम् अर्थशास्त्रियों के निर्वाचित वर्ग ने इस परिसम्वाद में भाग लिया। जिन विषयों पर चर्चा की गयी वह थे (१) कृषि सम्बन्धी योजना की विधि एवम् उपागम (२) कृषि सम्बन्धी योजना के दाँव-पेच (३) कार्यक्रमों तथा लक्ष्यों के बहिर्वेषण एवम् निरूपण की विधियाँ (४) योजना बनाने के लिए आवश्यक संस्थायें, निवेष अथवा प्रोत्साहन। देश में इस विषय पर इस प्रकार की यह प्रथम गोष्ठी थी और योजना बनाने की विधियों एवम् रीतियों के उचित निर्धारण में यह बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। इस संगोष्ठी में हुए विमर्षों के विवरण को जल्दी ही प्रकाशित किया जायगा और इस विषय को यह एक पुरोगामी योगदान देने की आशा की जाती है।

संसद् का १८वाँ वार्षिक सम्मेलन त्रिवेन्द्रम में २८ से ३१ जनवरी १९६५ को हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन केरल के गवर्नर श्री वी. वी. गिरि द्वारा किया गया। प्रो० सेमुअल मठाई, केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था के सांख्यिकी सलाहकार डॉ० वी. जी. पान्से ने एक प्रावैधिक भाषण 'जनसंख्या तथा खाद्य संभरण' विषय पर दिया।

उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात यह कही कि यदि भारत के लोग पोषण के अति आवश्यक स्तर पर पहुँचने की आशा रखते हैं तो आधुनिक तकनीकी उन्नति के परिणामस्वरूप विभिन्न अवाओं सहित कृषि उत्पादन का बढ़ाना ही काफी नहीं है बल्कि मनुष्य एवम् पशु जनसंख्या पर भी कड़ा नियंत्रण करना पड़ेगा। सम्मेलन की अवधि में (१) पशुधन का अनुवांशिक सुधार तथा कृषि विकास का सांख्यिकी मूल्यांकन विषयों पर दो संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। पहली संगोष्ठी की अध्यक्षता भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त डॉ० पी० भट्टाचार्य ने की तथा दूसरी की अध्यक्षता राजनीति शास्त्र एवम् अर्थशास्त्र गोखले संस्था, पूना के सांख्यिकी आचार्य ए० आर० कामथ ने की। इन संगोष्ठियों का विवरण संसद् की पत्रिका में प्रकाशित किया जायगा।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जो कि आरम्भ से ही १६ वर्ष तक संसद् के प्रधान थे की स्मृति को स्मणार्थ करने के लिए संसद् ने एक व्याख्यान की संस्थापना की है जिसका शीर्षक है 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान'। यह व्याख्यान संसद् के वार्षिक सम्मेलन के उत्सव पर दिया जाया करेगा। पहला व्याख्यान फोर्ड फाउन्डेशन के डॉ० डब्ल्यू० डी० हौपर द्वारा संसद् के १८वें वार्षिक सम्मेलन में दिया गया। उनका व्याख्यान 'कृषि उत्पत्ति की मुख्य कमानियाँ' विषय पर 'कृषि विज्ञान की भारतीय पत्रिका' में जून १९६५ में प्रकाशित किया गया है। सहयोगात्मक लेखों को प्रस्तुत करने के लिए सम्मेलन में दो बैठकें डॉ० जी० आर० सेठ और डॉ० (कुमारी) ए० जार्ज की अध्यक्षता में हुईं। कुल मिला कर इन दो बैठकों में ३२ प्रावैधिक लेख प्रस्तुत किए गये।

पहले की भाँति रेल अधिकारियों ने संसद् के १८वें सम्मेलन, जो कि त्रिवेन्द्रम में हुआ, में भाग लेने वाले सदस्यों और प्रतिनिधियों को रियायत दी। संसद् इन रेल अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करती है।

संसद् के १९६४-६५ वर्ष के लिये जाँच किये हुए लेखे का विवरण आपके सामने प्रस्तुत है। सदैव की भाँति लेखा निरीक्षण एक व्यावसायिक लेखपाल द्वारा किया गया है।

इस वर्ष में संसद् की कार्यकारिणी परिषद् के सभी सदस्यों की सक्रिय सहायता के द्वारा संसद् का कार्य सम्भव हुआ। भारत तथा विदेशों—दोनों से ही अनेक सांख्यिकीय विशेषज्ञों ने संसद् की पत्रिका में प्रकाशन हेतु मिलने वाले लेखों का निर्णय करने में संसद् की सहायता की। इन सब के प्रति संसद् आभार प्रकट करना चाहती है। पत्रिका का हिन्दी परिशिष्ट तैयार करने में सहायता देने के लिए संसद् श्री बी० बी० पी० एस० गोयल के प्रति भी आभारी है। अन्त में मुझे संसद के सहायक सचिव डॉ० एम० एन० दास तथा श्री के० सी० राऊत तथा संसद् के सचिवालय के प्रति संसद् के कार्यों में रुचि लेने के लिये, आभार प्रकट करना है।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्, पूसा, नई दिल्ली

३० जून १९६५ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय लेखा

व्यय			आय	
वेतन द्वारा	२,७७१·००		आजीवन सदस्यता वृत्तियाँ	४९३·००
			साधारण सदस्यता वृत्तियाँ	२,७८६·००
कम : पत्रिका कोष में			अनुदानों द्वारा	१,३००·००
स्थानान्तरित धन (७५%)	२,०७८·२५		आवधिक जमा पर ब्याज	—
			अदल-बदल के कारण	
अन्य व्यय		६९२·७५	विभिन्न आय	१०·९१
डाक व्यय, पोस्ट बाक्स			दान प्राप्ति	४०·००
नवीकरण और दूरभाष				
यन्त्र व्यय	७५३·०४			
छपाई और लेखन सामग्री	३५०·०४			
बैंक व्यय	२४·२०			
रेल भाड़ा	—			
परिवहन व्यय	३३·००			
विभिन्न व्यय	७३·८१			
साइकिल मरम्मत व्यय	८·०२			
लेखा परीक्षण फीस	२५०·००			
मनोरंजन व्यय	५·६५			
जिल्द बंधवाई	४२·००			

विज्ञापन	४४·२५			
	१,५८४·०१			
कम: पत्रिका लेखा में स्थानान्तरित धन (७५%)	१,१८८·०१			
		३९६·००		
वार्षिक सम्मेलन व्यय				
बैठक व्यय	३४४·८५			
यातायात व्यय	६००·००			
पारितोषिक इत्यादि	२७०·००			
		१,२१४·८५		
मूल्य ह्रास				
	३६·००			
फरनीचर	३३·००			
साईकल				
		६९·००		
व्यय से अधिक आय		२,२५७·३१		
योग :		४,६२९·९१	योग:	४,६२९·९१

६४, रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली

सी० एस० भटनागर एण्ड कम्पनी
के नुमायन्दे शासपत्रित लेखापाल

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्, पूसा, नई दिल्ली

(प्रकाशन निधि लेखा)

३० जून, १९६५ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय लेखा

व्यय			आय		
प्रारंभिक माल द्वारा			**पुस्तकों की बिक्री द्वारा**		
८६ प्रतियाँ		१,२१८·६५	(i) रोकड़ बिक्री		२,८८२ ३७
१०० प्रतियों का क्रय मूल्य		१,४६७·००	(ii) उधार बिक्री		१३१·५०
डाक व्यय	५४.३२				२,०१३·८७
बैंक व्यय	२.८०				
लेखा परीक्षण व्यय	७५.००		**शेष माल** (लागत मूल्य पर)		
		१३२·१२	२१ प्रतियाँ १२·७१ की दर से	२६६·९१	
			६६ प्रतियाँ १४·८७ की दर से	९८१·४२	
व्यय से अधिक आय द्वारा		४४४·४३			१,२४८·३३
योग		रु० ३,२६२·२०	योग		रु०३,२६२·२०

६४, रीगल बिल्डिंग,
नई दिल्ली
ता :

सी० एस० भटनागर और कम्पनी के नुमायन्दे
शासपत्रित लेखापाल